CBSE Class 09 - Hindi A
Sample Paper 05 (2020-21)

Maximum Marks: 80
Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्नपत्र में चार खंड हैं।
- सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।

खंड - क (अपठित गद्यांश)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (8)**

जहाँ भी दो नदियाँ आकर मिल जाती हैं, उस स्थान को अपने देश में 'तीर्थ' कहने का रिवाज़ है। और यह केवल रिवाज़ की ही बात नहीं है; हम सचमुच मानते हैं कि अलग-अलग नदियों में स्नान करने से जितना पुण्य होता है, उससे कही अधिक पुण्य संगम स्नान में है। किंतु, भारत आज जिस दौर से गुज़र रहा है, उसमें असली संगम वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच हैं, जिन पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्र होती हैं।

नदियों की विशेषता यह है कि वे अपनी धाराओं में अनेक जनपदों का सौरभ, अनेक जनपदों के आँसू और उल्लास लिए चलती हैं और उनका पारस्परिक मिलन वास्तव में नाना के आँसू और उमंग, भाव और विचार, आशाएँ और शंकाएँ समाहित होती हैं। अतः जहाँ भाषाओं का मिलन होता है, वहाँ वास्तव में विभिन्न जनपदों के हृदय ही मिलते हैं, उनके भावों और विचारों का ही मिलन होता है तथा भिन्नताओं में छिपी हुई एकता वहाँ कुछ अधिक प्रत्यक्ष हो उठती है। इस दृष्टि से भाषाओं के संगम आज सबसे बड़े तीर्थ हैं और इन तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है, वह भारतीय एकता का सबसे बड़ा सिपाही और संत है।

हमारी भाषाएँ जितनी ही तेज़ी से जगेंगी, हमारे विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतना ही बढ़ता जाएगा। भारतीय केवल अपनी ही भाषा में प्रसिद्ध होकर न रह जाएँ, बल्कि भारत की अन्य भाषाओं में भी उनके नाम पहुँचे और उनकी कृतियों की चर्चा हो। भाषाओं के जागरण का आरंभ होते ही एक प्रकार का अखिल भारतीय मंच आप-से-आप प्रकट होने लगा है। आज प्रत्येक भाषा के भीतर यह जानने की इच्छा उत्पन्न हो गई है कि भारत की अन्य भाषाओं में क्या हो रहा है, उनमें कौन-कौन ऐसे लेखक हैं, तथा कौन-सी विचारधारा वहाँ प्रभुसत्ता प्राप्त कर रही है।

i. लेखक ने आधुनिक संगम-स्थल किसको माना है और क्यों? **(2)**
ii. भाषा-संगमों में भारत की किन विशेषताओं का संगम होता है? **(2)**
iii. अलग-अलग प्रदेशों में आपसी ज्ञान किस प्रकार बढ़ सकता है? **(2)**
iv. दो नदियों का मिलन किसका प्रतीक है? **(2)**

v. विपरीतार्थक शब्द बताइए - भिन्नता, प्रत्यक्षा **(1)**

vi. इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। **(1)**

खंड - ख (व्याकरण)

2. 'पराकाष्ठा' शब्द में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए।
   a. परा + काष्ठ
   b. पर + काष्ठ
   c. परा + काष्ठा
   d. पर + काष्ठा
3. 'ई' प्रत्यय लगाकर दो नए शब्द बनाइए।
   a. बीमारी, आज़ादी
   b. नारी, सति
   c. लुहारी, फुलारी
   d. कोशिशि, लेखति
4. 'अतिरिक्त' शब्द में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए।
   a. अ + तिरिक्त
   b. अति + रिक्त
   c. अत + रिक्त
   d. अत्य + रिक्त
5. 'स' उपसर्ग युक्त शब्द हैं -
   a. सन्मित्र, संहार
   b. सहित, सपरिवार
   c. सञ्चालन, सम्मान
   d. सच्चरित्र, सन्मार्ग
6. 'भरपेट' शब्द का समास विग्रह कर समास का नाम लिखिए।
   a. पेट भरकर - समास विग्रह
      बहुव्रीहि समास - समास का नाम
   b. पेट भरकर - समास विग्रह
      कर्मधारय समास - समास का नाम
   c. पेट भरकर - समास विग्रह
      तत्पुरुष समास - समास का नाम
   d. पेट भरकर - समास विग्रह
      अव्ययीभाव समास - समास का नाम
7. समास विग्रह के पदों के मेल से बने हुए नए शब्द को ________ कहते हैं। रिक्त स्थान के लिए उचित विकल्प चुनिए।

a. समस्त पद

b. संधि

c. अव्यय

d. समास विग्रह

8. 'सात सौ दोहों का समूह' समास विग्रह का उचित समस्त पद और समास का नाम दिए गए विकल्पों में से चुनिए।

a. सतसई - समस्त पद
द्विगु समास - समास का नाम

b. सप्तसमूह - समस्त पद
बहुव्रीहि समास - समास का नाम

c. सप्तपद - समस्त पद
कर्मधारय समास - समास का नाम

d. सातसाईं - समस्त पद
द्वंद्व समास - समास का नाम

9. 'जीवन - मरण' का समास विग्रह कर समास का नाम लिखिए।

a. जीवन और मरण - समास विग्रह
द्वंद्व समास - समास का नाम

b. जीवन और मरण - समास विग्रह
अव्ययीभाव समास - समास का नाम

c. जीवन और मरण - समास विग्रह
द्विगु समास - समास का नाम

d. जीवन है जो मरण - समास विग्रह
कर्मधारय समास - समास का नाम

10. यदि मैं वहां होता, तो तुम सबको बचा लेता। - अर्थ के आधार पर वाक्य भेद बताएं।

a. संदेहवाचक वाक्य

b. आज्ञावाचक वाक्य

c. संकेतवाचक वाक्य

d. प्रश्नवाचक वाक्य

11. जिन वाक्यों में किसी से कोई बात पूछी जाए, उन्हें ________ वाक्य कहते हैं।

a. संकेतवाचक वाक्य

b. संदेहवाचक वाक्य

c. प्रश्नवाचक वाक्य

d. आज्ञावाचक वाक्य

12. अपने आस -पास साफ -सफाई रखें । - अर्थ के आधार पर वाक्य भेद बताएं ।

a. आज्ञावाचक वाक्य

b. संकेतवाचक वाक्य

c. निर्देशवाचक वाक्य

d. आदेशवाचक वाक्य

13. जिन वाक्यों से एक क्रिया के दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का बोध हो, उन्हें ________ वाक्य कहते हैं ।

a. विस्मयादिवाचक वाक्य

b. संकेतवाचक वाक्य

c. इच्छावाचक वाक्य

d. संदेहवाचक वाक्य

14. जहाँ किसी एक वस्तु या प्राणी की तुलना किसी प्रसिद्ध वस्तु या प्राणी से की जाए, उसे कौन-सा अलंकार कहते हैं?

a. अतिशयोक्ति

b. उपमा

c. रूपक

d. उत्प्रेक्षा

15. कोई विशिष्ट शब्द जब एक से अधिक अर्थ व्यक्त करे, तो वहां कौन-सा अलंकार होता है ?

a. श्लेष

b. उपमा

c. अनुप्रास

d. यमक

16. निम्नलिखित पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार बताइए-

ओ चिंता की पहली रेखा, अरे विश्व–वन की व्याली।

ज्वालामुखी स्फोट के भीषण,प्रथम कम्प–सी मतवाली।

a. उत्प्रेक्षा

b. रूपक

c. अतिशयोक्ति

d. उपमा

17. फूल हँसे कलियाँ मुसकाई।

उपर्युक्त पंक्ति में कौन–सा अलंकार है?

a. मानवीकरण

b. रूपक

c. उपमा

d. अतिशयोक्ति

खंड - ग (पाठ्य पुस्तक)

18. **निम्नलिखित गद्यांशों और उनके नीचे दिए गए प्रश्नोत्तरों को ध्यानपूर्वक पढ़िए-**

अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक-दूसरे को चाटकर और सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे-विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हलकी-सी रहती है, जिस पर ज़्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता। जिस वक्त ये दोनों बैल हल या गाड़ी में जोत दिए जाते और गरदन हिला-हिलाकर चलते, उस वक्त हर एक की यही चेष्टा होती थी कि ज़्यादा-से-ज़्यादा बोझ मेरी ही गरदन पर रहे। दिन-भर के बाद दोपहर या संध्या को दोनों खुलते, तो एक-दूसरे को चाट-चूटकर अपनी थकान मिटा लिया करते।

प्रश्न

i. गुप्त शक्ति किनमें थी? मनुष्य किस गुप्त शक्ति से वंचित है?
ii. 'दोनों की मित्रता अनुकरणीय थी', स्पष्ट कीजिए।
iii. दोनों कभी-कभी सींग क्यों मिला लिया करते थे?

19. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

a. 'सालिम अली, तुम लौटोगे ना!' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?
b. ल्हासा की ओर में "मैं अब पुस्तकों के भीतर था' -ऐसा लेखक ने क्यों कहा?
c. थोङ्ला के पहले के आखिरी गाँव पहुँचने पर भिखमंगे के वेश में होने के बावजूद लेखक को ठहरने के लिए उचित स्थान मिला जबकि दूसरी यात्रा के समय भद्र वेश भी उन्हें उचित स्थान नहीं दिला सका। क्यों?
d. दो बैलों की कथा में प्रेमचंद ने गधे की किन स्वभावगत विशेषताओं के आधार पर उसके प्रति रूढ़ अर्थ **मूर्ख** का प्रयोग न कर किस नए अर्थ की ओर संकेत किया है?
e. 'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ में 'प्रेमचंद और होरी' की किस कमजोरी की ओर संकेत किया गया है?

20. **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

कानिन दै अँगुरी रहिबो जवहीं मुरली धुनि मंद बजैहै।
मोहनी तानन सों रसखानि अटा चढ़ि गोधन गैहै तौ गैहै।।
टेरि कहौं सिगरे ब्रजलोगनि काल्हि कोऊ कितनो समुझैहै।
माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै।।

i. श्री कृष्ण की अदाएँ गोपी को किस मनोदशा में ले जाती हैं?
ii. गोपी स्वयं को कब नहीं सँभाल पाती है और क्यों?
iii. गोपी अपनी बात ब्रज के लोगों को क्यों सुना रही है?

21. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

a. वाख कविता की कवयित्री का **घर जाने की चाह** से क्या तात्पर्य है?
b. कबीर के अनुसार इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है?
c. काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए- किस दावानल की ज्वालाएँ हैं दीखीं?

d. भाव स्पष्ट कीजिए- हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ, खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुँआ।

e. सखी ने गोपी से कृष्ण का कैसा रूप धारण करने का आग्रह किया था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

22. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही 3 के उत्तर दीजिये:

a. बच्चों को किस समय और कहाँ जाते हुए देखकर कवि को पीड़ा हुई है? बच्चे काम पर जा रहे हैं कविता के आलोक में लिखिए।

b. मृदुला गर्ग लेखिका की माँ की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

c. सिद्ध कीजिए कि उमा के कथन में लड़कियों की पीड़ा प्रकट होती है।

खंड - घ (लेखन)

23. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिये:

a. **आधुनिक जीवन में मोबाइल** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए।

- वर्तमान समय में मोबाइल की महत्ता
- मोबाइल फोन द्वारा प्राप्त होने वाली सुविधाएँ
- मोबाइल फोन से होने वाले नुकसान

b. **स्वास्थ्य की रक्षा** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए।

- आवश्यकता
- पोषक भोजन
- लाभकारी सुझाव

c. **बढ़ते उद्योग कटते वन** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दो में अनुच्छेद लिखिए।

- भूमिका
- वृक्षों से लाभ
- वृक्षों की कटाई और उसके दुष्परिणाम
- वृक्षारोपण
- उपसंहार

24. आपका टेलीफोन लगभग पंद्रह दिनों से खराब है। इसकी शिकायत करते हुए महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड के महाप्रबंधक को पत्र लिखिए।

OR

आपके विद्यालय के पुस्तकालय में हिंदी की पुस्तकें, समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ कम आती हैं। इस कमी की ओर ध्यानाकर्षित कराते हुए हिंदी की पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ मँगवाने हेतु अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र लिखिए।

25. बस में किसी अपरिचित से मित्रता करते हुए यात्रियों के बीच संवाद को लिखिए।

OR

बस के समय को लेकर यात्री और बस-परिचालक के बीच संवाद लिखिए।

26. **संगत का असर** विषय पर लगभग 100-120 शब्दों में एक लघुकथा लिखिए।

OR

मैं तितली हूँ विषय पर लगभग 100-120 शब्दों में एक लघुकथा लिखिए।

CBSE Class 09 - Hindi A
Sample Paper 05 (2020-21)

Solution

खंड - क (अपठित गद्यांश)

1. i. लेखक ने आधुनिक संगम-स्थल उन सभाओं व मंचो को माना है, जहाँ पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्रित होती हैं। ये भाषाएँ विभिन्न जनपदों में बसने वाली जनता की भावनाएँ लेकर आती हैं।
   ii. किसी भी भाषा के भीतर उस भाषा को बोलने वाली जनता के आँसू और उमंग, भाव और विचार, आशाएँ और शंकाएँ समाहित होती हैं। फलतः जहाँ भाषाओं का संगम होता है, वहाँ विभिन्न भाषा-भाषी लोगों के भावों और विचारों का संगम होता है।
   iii. भाषाएँ ही लाखों वर्षों तक ज्ञान-विज्ञान को सुरक्षित रखती हैं तथा ज्ञान का प्रचार-प्रसार करती हैं। अतः हम कह सकते हैं कि अलग-अलग प्रदेशों में आपसी ज्ञान तभी बढ़ सकता है, जब भारतीय भाषाएँ जागेंगी।
   iv. नदियाँ अपनी धाराओं के साथ मार्ग में आने वाले जनपदों के हर्ष एवं विषाद की कहानी लेकर बहती हैं। अत: उनका मिलन विभिन्न जनपदों के मिलन का ही प्रतीक है।
   v. विपरीतार्थक शब्द-अभिन्नता, परोक्ष।
   vi. भाषाओं का महत्व।

खंड - ख (व्याकरण)

2. (c) परा + काष्ठा

   Explanation: 'पराकाष्ठा' शब्द में 'परा' उपसर्ग है और 'काष्ठा' मूलशब्द है।
3. (a) बीमारी, आज़ादी

   Explanation: 'बीमारी' और 'आज़ादी' शब्द में 'ई' प्रत्यय है और 'बीमार' और 'आज़ाद' मूल शब्द है।
4. (b) अति + रिक्त

   Explanation: 'अतिरिक्त' शब्द में 'अति' उपसर्ग है और 'रिक्त' मूल शब्द है।
5. (b) सहित, सपरिवार

   Explanation: 'सहित' और 'सपरिवार' में 'स' उपसर्ग हैं और मूल शब्द क्रमशः 'हित' और 'परिवार' हैं ।
6. (d) पेट भरकर - समास विग्रह

   अव्ययीभाव समास - समास का नाम

   Explanation: 'भरपेट' में पूर्व पद अव्यय होने के कारण यहाँ अव्ययीभाव समास है।
7. (a) समस्त पद

   Explanation: समास विग्रह से मिले हुए नवीन पद को समस्त पद कहते हैं।
8. (a) सतसई - समस्त पद

   द्विगु समास - समास का नाम

Explanation: यहाँ पूर्व पद (सप्त) संख्यावाची विशेषण है इसलिए यहाँ द्विगु समास होगा।

9. (a) जीवन और मरण - समास विग्रह

द्वंद्व समास - समास का नाम

Explanation: यहाँ दोनों पद ही प्रधान होने के कारण यहाँ द्वंद्व समास है।

10. (c) संकेतवाचक वाक्य

Explanation: एक क्रिया दूसरी क्रिया पर निर्भर है।

11. (c) प्रश्नवाचक वाक्य

Explanation: जिन वाक्यों में बात या प्रश्न पूछा जाए, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं।

12. (a) आज्ञावाचक वाक्य

Explanation: आदेश, निर्देश, आज्ञा, अनुमति आदि आज्ञावाचक/आज्ञार्थक वाक्यों द्वारा अभिव्यक्त होते हैं।

13. (b) संकेतवाचक वाक्य

Explanation: इन वाक्यों में कारण , शर्त तथा एक क्रिया में दूसरी का संकेत आदि का बोध होता है ।

14. (b) उपमा

Explanation: उपमा I जैसे- यह देखिए अरविन्द से शिशुवृंद कैसे सो रहे। (यहाँ शिशु वृंद की तुलना कमल से की गई है)

15. (a) श्लेष

Explanation: श्लेष I जैसे- मंगन को देखि पट देत बार-बार है। (पट- दरवाजा, पट-वस्त्र) 'पट' शब्द जब एक से अधिक अर्थ व्यक्त कर रहा है I

16. (b) रूपक

Explanation: रूपक I स्पष्टीकरण - उपर्युक्त पंक्ति में चिन्ता उपमेय में विश्व-वन की व्याली आदि उपमानों का आरोप किया गया है, अत: यहाँ 'रूपक' अलंकार है।

17. (a) मानवीकरण

Explanation: मानवीकरण अलंकार I स्पष्टीकरण - उपर्युक्त पंक्ति में निर्जीव पदार्थ (फूल व कलियाँ) का उल्लेख सजीव प्राणियों की तरह किया I

खंड - ग (पाठ्य पुस्तक)

18. i. झूरी काछी के दोनों बैलों हीरा और मोती में मूक भाषा में विचारों का आदान-प्रदान करने की विशेष शक्ति थी । वे दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठकर मूक-भाषा में एक-दूसरे के मन की बात समझ लिया करते थे। इसके विपरीत मनुष्य जीवों में सर्वश्रेष्ठ होने का दावा करता है पर वह बातचीत किए बिना एक-दूसरे के मन के भाव-विचार नहीं जान सकता है। इस प्रकार मनुष्य मूकभाषा में बातचीत करके एक-दूसरे के मन की बातें समझने की कला से वंचित है।

    ii. हीरा-मोती एक दूसरे से बहुत प्रेम करते थे। वे अपना प्रेम एक-दूसरे को चाट-सूँघकर प्रकट करते थे। इसके अलावा वे एक-दूसरे के सुख-दुख का भी पूरा ध्यान रखते थे। गाड़ी या हल में जोते समय दोनों की यही कोशिश रहती थी कि ज़्यादा से ज़्यादा वज़न अपनी ओर रखें ताकि दूसरे के कंधे पर ज्यादा वज़न न रहे। वे एक साथ ही चारा-पानी खाते-पीते और एक-दूसरे की थकान उतारने का प्रयास करते थे। इस प्रकार हीरा-मोती की मित्रता अनुकरणीय थी।

    iii. दोनों कभी-कभी अपना प्रेम-भाव प्रकट करने के लिए सींग मिला लिया करते थे। ऐसा करते समय उनके मन में किसी भी

प्रकार का बैर-भाव नहीं रहता था। वे घनिष्ठता बढ़ाने के लिए ही विनोद और आत्मीयता के भाव से सींग मिलाते थे ताकि दोनों की मित्रता प्रगाढ़ बनी रहे।

19. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

a. लेखक सालिम अली के स्वभाव से भली-भांति परिचित थे | वे रोज़ नियम से गले में दूरबीन लटकाएँ तथा कंधे पर बोझ टाँगें पक्षियों के विषय में जानकारी प्राप्त करने निकलते थे | कुछ समय पश्चात वे उनके बारे में दुर्लभ जानकारी एकत्रित कर लौट आते थे | आज उनकी मृत्यु के बाद भी लेखक को ऐसा ही लग रहा है कि आज भी सालिम अली हमेशा की तरह इस अंतहीन सफ़र से लौट आएँगे इसलिए लेखक ने ऐसा कहा है ," सालिम अली, तुम लौटोगे ना !"

b. लेखक का बौद्ध धर्म के प्रति आस्था और लगाव था। अपनी तिब्बत यात्रा के दौरान उन्हें बौद्ध धर्म को जानने का अवसर मिला। शेकर विहार में एक मंदिर में उन्हें बुद्ध वचन कंजुर की अनुवादित 103 पोथियाँ मिल गईं। बौद्ध धर्म के प्रति रुझान के कारण वह इन पुस्तकों को पढ़ने में रम गया, इसलिए उसने कहा कि मैं अब पुस्तकों के भीतर था।

c. थोड्ला के पहले के आखिरी गाँव पहुँचने पर भिखमंगे के वेश में होने के बावजूद भी लेखक ठहरने के लिए उचित स्थान पा गया क्योंकि उस समय उनके साथ उनके बौद्ध भिक्षु सुमति थे। सुमति की उस गाँव में अच्छी जान-पहचान थी। दूसरी यात्रा के समय लेखक भद्र वेष में घोड़े पर सवार होकर गया था | उस समय वह उस गाँव के लोगों के लिए अपरिचित था। लेखक उस यात्रा में शाम के समय पहुँचा था। शाम के समय वहाँ के लोग छङ् पीकर अपने होश-हवास खो बैठते हैं। इसके अलावा उसके साथ उनका मित्र सुमति भी नहीं था इसलिए उन्हें एक टूटे झोपड़े में रात बितानी पड़ी |

d. गधे को उसके स्वभाव के आधार पर मूर्खता का पर्याय समझा जाता है, पर लेखक प्रेमचंद ने उसकी स्वाभाविक विशेषताओं, सरलता और सहनशीलता के आधार पर उसे मूर्ख नहीं कहा है बल्कि वे एक नए अर्थ की ओर हमारा ध्यान खींचते है। गधे में निहित गुणों के आधार पर लेखक ने उसकी तुलना ऋषि-मुनियों से की है। सुख-दुख, लाभ-हानि तथा विपरीत परिस्थितियों में एक जैसा बने रहने के गुण के कारण लेखक ने उसके सरल और सहनशील होने की ओर संकेत किया है। उसकी सहिष्णुता को उन ऋषि-मुनियों के समान बताया है जो हर परिस्थिति में एक समान व्यवहार करते हैं |

e. 'प्रेमचंद के फटे जूते' पाठ में प्रेमचंद और होरी दोनों की एक ही कमजोरी की ओर संकेत किया गया है। दोनों ही अपने नियम-धर्म के पक्के थे। उन्होंने कभी भी अपने नैतिक मूल्यों का त्याग नहीं किया। कभी उन्होंने अपने धर्म का उल्लंघन नहीं किया। अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए आजीवन मुसीबतों को झेलते रहे पर दोनों ने ही कभी भी उनसे समझौता नहीं किया।

20. i. श्री कृष्ण जब मधुर स्वर में मुरली बजाते हैं और अटारी पर मधुर स्वर में गोधन गाते हैं, तब गोपी उन्हें सुनकर विवश हो जाती है और अनायास ही कृष्ण की ओर खिंची चली आती है। श्री कृष्ण की मादक तथा मोहक मुसकान देख गोपी का अपने ऊपर नियंत्रण नहीं रह जाता है।

ii. श्रीकृष्ण का मधुर गायन और उनकी मुरली की सुरीली तान को सुनकर गोपी स्वयं को सँभाले रखती है, परंतु उनका मोहक मुसकानयुक्त चेहरा देख वह स्वयं को सँभाल नहीं पाती है, क्योंकि वह श्रीकृष्ण की मुस्कान की दीवानी है।

iii. ब्रज में रहने के कारण गोपी को ब्रजवालों से लोक-लाज का भय था। किंतु कृष्ण की मुसकान देखकर वह खुद को सम्भाल नहीं पाती। स्वयं को न सम्भाल पाने के कारण वे लोक-लाज की मर्यादा की परवाह नहीं करती और कृष्ण की तरफ खिंची चली जाती है। अपनी इसी असर्मथता को गोपी ब्रजवासियों के समक्ष प्रकट कर रही है।

21. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

a. कवयित्री प्रभु की शरण को अपना घर मानती हैं। उनका 'घर जाने की चाह' से तात्पर्य है - इस भवसागर से मुक्ति पाकर अपने प्रभु की शरण में जाना।

b. इस संसार में सच्चा संत वही कहलाता है जो-
   i. सांसारिक मोहमाया और लोभ-लालच से दूर रहकर प्रभु की सच्ची भक्ति करता है।
   ii. सुख-दुख, लाभ-हानि, ऊँच-नीच, अच्छा-बुरा आदि को समान रूप से अपनाता है।
   iii. दिखावे की भक्ति नहीं करते हुए सच्ची भक्ति से प्रभु को प्राप्त करना चाहता है।
   iv. मनुष्य-मनुष्य में भेदभाव नही करता।

c. **भाव-सौंदर्य-** लोगों में स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजों से विरोध और उनके प्रति संघर्ष की भड़कती हुई भावना को शायद कोयल ने देख लिया था।

   शिल्प-सौंदर्य-
   - इस पंक्ति की भाषा तत्सम शब्द युक्त खड़ी बोली है।
   - दावानल की ज्वालाएँ में रूपक अलंकार है।
   - कोयल के साथ संवाद के कारण 'मानवीकरण अलंकार' है।
   - कोयल से प्रश्न पूछने के कारण पंक्ति प्रश्नात्मक शैली में है |

d. स्वाधीनता सेनानियों को जेल में अनेक भीषण यातनाओं को सहना पड़ता था। उनसे पशुओं के समान काम लिया जाता है जिससे वे अपना स्वाभिमान तथा देश के प्रति अभिमान भूल जाएँ। स्वाधीनता सेनानी इन कार्यों को खुशी-खुशी करके ब्रिटिश सरकार का घमंड चूर-चूर कर रहे थे। ब्रिटिश सरकार को लगता था कि वे जितना ज्यादा भारतीयों पर अत्याचार करेंगे उतना ही वे अपने अभिमान को भूल जाएँगे , पर उनका ऐसा सोचना गलत था क्योंकि भारतवासी उनके प्रत्येक अत्याचार को ख़ुशी-ख़ुशी सहन कर रहे थे।

e. सखी गोपी को वही सब कुछ धारण करने को कहती है, जो श्रीकृष्ण धारण किया करते थे। वह गोपी से कहती है कि सिर पर मोर के पंख का मुकुट, गले में कुंजों की माला, तन पर पीले वस्त्र धारण कर तथा हाथ में लाठी लिए वन-वन गायों को चराने जाए।

22. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही 3 के उत्तर दीजिये:

a. बच्चों को कड़ाके की सर्दी में सुबह-सुबह कोहरे से ढकी हुई सड़क पर जाते हुए देखकर कवि को अत्यंत पीड़ा हुई। ये बच्चे कारखानों और अन्य स्थानों पर बाल मजदूरी करने जा रहे थे। खेलने-कूदने की उम्र में बच्चों को काम पर जाते देख कवि बेहद दुखी और निराश है। वह उनके लिए सुरक्षित भविष्य चाहता है।

b. लेखिका की माँ गोरी-सुंदर तथा दुबली महिला थी। लेखिका ने उन्हें परीजात-सी खूबसूरत बताया है। वे इतनी दुबली-पतली थीं कि खादी की साड़ी पहनने से उनकी कमर चनका खा जाती थी। उनके चारित्रिक गुण ऐसे थे जो उन्हें लोकप्रिय बनाते थे। उनमें ईमानदारी, निष्पक्षता, दूसरों की छिपाने योग्य बातों को प्रकट न करने की कला, सत्यवादिता, दुनियादारी से दूरी और देश की आजादी के लिए संघर्ष करने की भावना उनमें कूट-कूटकर भरी थी। वे आम भारतीय माँ से हटकर थीं। वे घर-गृहस्थी, बाल-बच्चे, लाड़-प्यार और खाना पकाने तक ही सीमित नहीं रहना चाहती थीं। समाज-सेवा, लोक-कल्याण, त्याग आदि गुण उनमें भरे थे। उनके इन्हीं गुणों के कारण वे सभी की आदर की पात्र थीं।

c. उमा, रामस्वरूप की बी.ए. पास विवाह योग्य पुत्री है। उसे देखने शंकर नामक युवा अपने पिता गोपाल प्रसाद के साथ

आता है। गोपाल प्रसाद अधिक पढ़ी-लिखी बहू नहीं चाहता है। वह तरह-तरह से उमा की जाँच-पड़ताल करता है, जिससे उमा को गहरी ठेस पहुँचती है। उमा की आँखों पर चश्मा लगा देखकर वह उमा की उच्च शिक्षा का अनुमान कर लेता है और तरह-तरह की बातें करता है। उमा द्वारा यूँ अपनी तोल-मोल किया जाना अपमानजनक लगता है। वह दुखी होती है और कहती है कि वह मेज-कुर्सी से भी बदतर है क्योंकि खरीदने वाला मेज-कुर्सी से कोई प्रश्न तो नहीं करता है। बस उन्हें मोल-भाव कर खरीद लिया जाता है। ऐसा आदमी जो लड़कियों को भेड़-बकरियों के समान समझता है, खुद कसाई के समान है। वह अपनी ऊँची पढ़ाई को भी जायज़ ठहराती है। इस प्रकार उसके कथन में लड़कियों की पीड़ा है।

खंड - घ (लेखन)

23. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिये:

a. मोबाइल आज विश्व में क्रांति का वाहक बन गया है। बिना तारों वाला मोबाइल फ़ोन जगह-जगह लगे ऊँचे टॉवरों से तरंगों को ग्रहण करते हुए मनुष्य को दुनिया के प्रत्येक कोने से जोड़े रहता है। मोबाइल फ़ोन सेवा प्रदान करने के लिए विभिन्न टेलीफ़ोन कंपनियाँ अपनी-अपनी सेवाएँ देती हैं। मोबाइल फ़ोन बात करने, एसएमएस की सुविधा प्रदान करने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के खेल, कैलकुलेटर, फ़ोनबुक की सुविधा, समाचार, चुटकुले, इंटरनेट सेवा आदि भी उपलब्ध कराता है। अनेक मोबाइल फोनों में इंटरनेट की सुविधा भी होती है, जिससे ई-मेल भी किया जा सकता है। मोबाइल फोन सुविधाजनक होने के साथ ही नुकसानदायक भी है। मोबाइल फ़ोन का सबसे बड़ा दोष यह है कि यह समय-असमय बजता ही रहता है। लोग सुरक्षा और शिष्टाचार भूल जाते हैं। अकसर लोग गाड़ी चलाते समय भी फ़ोन पर बात करते हैं, जो असुरक्षित ही नहीं, बल्कि कानूनन अपराध भी है। अपराधी एवं असामाजिक तत्त्व मोबाइल का गलत प्रयोग अनेक प्रकार के अवांछित कार्यों में करते हैं। इसके अधिक प्रयोग से कानों में हृदय पर बुरा प्रभाव पड़ता है। अतः इन खतरों से सावधान होना आवश्यक है।

b. **स्वास्थ्य की रक्षा**

वर्तमान समय में प्रत्येक मनुष्य की जीवन-शैली इतनी भागदौड़ से भर गई है कि वे अपने स्वास्थ्य की रक्षा कर पाने में असमर्थ हो चुके हैं। जहाँ पहले के समय में व्यक्ति की औसत आयु 75 वर्ष थी, वह आज घटकर 60 वर्ष हो गई है। स्वास्थ्य की रक्षा बहुत ही आवश्यक है। खराब स्वास्थ्य के साथ व्यक्ति कोई भी कार्य उचित तौर-तरीके से नहीं कर पाता है। प्रत्येक व्यक्ति को आधारभूत वस्तुओं का संचय करने के लिए स्वस्थ रहने की आवश्यकता है। कहा जाता है स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है, इसीलिए स्वास्थ्य की रक्षा हमारे लिए आवश्यक है। स्वास्थ्य की रक्षा के लिए पोषक भोजन लेना अति आवश्यक है।

हरी सब्जियाँ, दूध, दही, फल आदि का सेवन हमारे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हुए हमारे स्वास्थ्य की रक्षा करता है। आजकल जंकफूड और फास्ट फूड का प्रचलन अपने चरम पर है। इसकी चपेट में लाखों लोग आ चुके हैं। और इसी कारण वे अपना स्वास्थ्य खराब कर चुके हैं। आजकल के बच्चों को मोटापा, सुस्ती व भिन्न-भिन्न प्रकार की बीमारियों ने जकड़ लिया है। हमें जंक फूड एवं फास्ट-फूड से दूरी बनाते हुए पौष्टिक आहार लेने चाहिए, जिससे हम अपने स्वास्थ्य की रक्षा करते हुए, अपने और दूसरों के जीवन को खुशियाँ प्रदान कर सकें।

c. **भूमिका-** ईश्वरीय सृष्टि की अद्भुत, अलौकिक रचना प्रकृति है। मनुष्य ने प्रकृति की गोद में आँखें खोली हैं एवं प्रकृति ने ही मनुष्य का पालन-पोषण किया है, दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। उद्योगों के बढ़ने से वनों की कटाई बढ़ती जा रही है।

वृक्षों से लाभ- मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन पेड़-पौधों पर आश्रित रहता है। पेड़-पौधों की लकड़ी विभिन्न रूपों में मनुष्य के काम आती है। वृक्षों से हमें फल-फूल, जड़ी-बूटियाँ आदि प्राप्त होती हैं। शुद्ध वायु एवं तपती दोपहर में छाया वृक्षों से ही प्राप्त होती है। वृक्ष वर्षा में सहायक होते हैं एवं भूमि को उर्वरक बनाते हैं।

वृक्षों की कटाई और उसके दुष्परिणाम- जनसंख्या के दबाव, शहरों का विस्तार, फैक्ट्रियों के लिए भूमि की कमी को दूर करने के लिए वृक्षों की व्यापक पैमाने पर कटाई मनुष्य के द्वारा की जा रही है, जिसके परिणामस्वरूप प्रदूषण का बढ़ना एवं प्राकृतिक आपदाओं से विनाश का खतरा बढ़ता जा रहा है।

वृक्षारोपण- देर से सही, मनुष्य ने वृक्षों के महत्व को स्वीकारा तो है। वन विभाग द्वारा नये वृक्षों का रोपण किया जा रहा है एवं पुराने वृक्षों का संरक्षण किया जा रहा है। लोगों को जागरूक करने के लिए वन महोत्सव प्रारम्भ किया गया है जो जुलाई मास में मनाया जाता है जिसमें व्यापक रूप से वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाया जाता है।

उपसंहार- आज आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य प्रकृति से जुड़े। यह समझे कि कुल्हाड़ी वृक्षों पर नहीं वरन् उसी पर चल रही है। हमारी संस्कृति में वृक्षों पर देवताओं का वास बताया गया है एवं वृक्ष काटना भयंकर पाप बताया है। वृक्षारोपण करने को महान् पुण्य बताया है।

24. पी-276,
पालम, दिल्ली-110077
27 फरवरी, 2019
महाप्रबंधक महोदय,
महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड,
संचारभवन, कनॉटप्लेस,
नई दिल्ली।

विषय- खराब टेलीफोन के संबंध में

मान्यवर,

मैं आपका ध्यान अपने टेलीफोन की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। इसका नंबर 98254598XX है। यह फोन पिछले पंद्रह दिनों से खराब पड़ा है। इसकी शिकायत स्थानीय कार्यालय में कर चुका हूँ, पर स्थिति वही ढाक के तीन पात वाली है। वहाँ के अधिकारी एक तो ढंग से बात नहीं करते हैं और न कोई कार्य करते हैं। कभी कोई सुनता भी है तो आश्वासन देकर टाल देते हैं। मेरे परिवार में सभी के काम पर जाने के बाद घर में वृद्ध पिता जी के अलावा कोई नहीं रहता है। कोई आवश्यकता पड़ने पर वे किसी-न-किसी को फोन के माध्यम से बता तो सकते थे, पर फोन खराब होने से एकमात्र सहारा छिन-सा गया है। वैसे भी आजकल फोन कितना जरूरी हो गया है यह आप स्वयं भी महसूस करते होंगे।

अतः आपसे प्रार्थना है कि आप कर्मचारियों को टेलीफोन ठीक करने का आदेश देने की कृपा करें। आपकी इस कृपा के लिए मैं आभारी रहूँगा।

धन्यवाद सहित।

भवदीय

करन सिंह

OR

प्रधानाचार्य जी,

कैनेडी सीनियर सेकेंड्री स्कूल,

राज नगर-पार्ट-2,

पालम, दिल्ली।

01 मार्च, 2019

विषय- हिंदी की पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ एवं समाचार-पत्र मँगवाने के संबंध में

महोदया,

विनम्र प्रार्थना यह है कि मैं आपके विद्यालय की नौवीं 'अ' का छात्र हूँ। इस विद्यालय का पुस्तकालय अत्यंत समृद्ध है, जिसमें विभिन्न विषयों की उच्चकोटि के विद्वानों द्वारा लिखी पुस्तकें हैं। गणित, विज्ञान जैसे विषयों पर पर्याप्त पुस्तकें हैं, किंतु इनमें से अधिकांश पुस्तकें अंग्रेजी माध्यम में हैं। यही हाल यहाँ आनेवाली पत्रिकाएँ तथा समाचार-पत्रों का है। यहाँ हिंदी में पुस्तकों, समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं की संख्या बहुत कम है। हम अपने अध्यापक से नंदन, चंपक, सुमन-सौरभ, चंदा-मामा आदि बाल पत्रिकाओं के नाम सुनते तो हैं, पर पढ़ने से वंचित रह जाते हैं। अतः आपसे प्रार्थना है कि हिंदी विषय की पुस्तकें, बाल-पत्रिकाएँ तथा हिंदी भाषा के समाचार पत्र मँगवाने की कृपा करें। हम छात्र आपके आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

गौरव सिंह

IX - 'अ'

अनु - 04

25. **पहला यात्री** - भाई साहब! यह बस कहाँ तक जा रही है?

दूसरा यात्री - आपको कहाँ जाना है भाई ?

पहला यात्री - मुझे तो करनाल जाना है।

दूसरा यात्री - आ जाओ भाई, बस करनाल तक ही जा रही है। जल्दी करो, चलने ही वाली है।

पहला यात्री - पहले टिकट तो ले लें।

दूसरा यात्री - आप आ जाइए। बस कंडक्टर ने बस में ही टिकट देने को कहा है।

पहला यात्री - ठीक है, आप मेरे लिए एक सीट रखिए, जब तक मैं आ रहा हूँ।

दूसरा यात्री - करनाल में आप किसी कार्य से जा रहे हैं और वहाँ किस जगह ठहरेंगे?

पहला यात्री - मेरे मित्र का गृहप्रवेश है। अतः मेरा जाना आवश्यक था। वहीं जा रहा हूँ।

दूसरा यात्री - क्या इत्तफ़ाक की बात है। मैं भी अपने मित्र के गृहप्रवेश में ही जा रहा हूँ।

पहला यात्री - (कुछ समय पश्चात्) चलिए उतरते हैं। करनाल आ गया। देर हो रही है। अब तो मित्र से सीधा बैंक्वेट हॉल में ही मिलना होगा ।

दूसरा यात्री - आपको कौन-से बैंक्वेट हॉल में जाना है?

पहला यात्री - आशियाना बैंक्वेट हॉल बताया था मेरे मित्र ने।

दूसरा यात्री - अरे! मैं भी तो वहीं जा रहा हूँ।

पहला यात्री - अच्छा ! तो आप भी मि. शर्मा के घर जा रहे हैं।

दूसरा यात्री - हाँ भाई, मैं भी वहीं जा रहा हूँ। वह मेरे परम मित्र हैं।

पहला यात्री - अरे! वह तो मेरे भी परम मित्र हैं। अब तो हमारी भी मित्रता हो गई। चलिए साथ ही चलते हैं।

OR

यात्री - अरे भाई! यह बस कहाँ तक जा रही है?

बस-परिचालक - भाई, यह हरिद्वार जा रही है।

यात्री -बस कब तक चलेगी ?

बस परिचालक - जैसे ही सवारियाँ पूरी हो जाएँगी, बस चल पड़ेगी।

यात्री - किंतु इसके चलने का कोई निर्धारित समय भी तो होगा ?

बस-परिचालक -हाँ, है न, पाँच बजे।

यात्री - (झुंझलाते हुए) अरे! पाँच तो बज गए हैं, फिर देर क्यों कर रहे हो?

बस-परिचालक - बस अभी चलने ही वाली है।

यात्री - (थोड़ा गुस्से में) आपको यात्रियों की सुविधाओं का भी तो ध्यान रखना चाहिए।

बस-परिचालक - साहब, गुस्सा मत कीजिए। हम भी चाहते हैं कि बस समय पर चले पर पूरी सवारियाँ तो हो जाएँ।

यात्री - (थोड़ी देर बाद) अब तो बस भी भर गई है। अब किसका इंतजार कर रहे हो? अब तो चलो।

बस-परिचालक - आप शांत बैठिए ! बस अभी चलते हैं।

यात्री- क्या शांति रखी जाए। एक तो इतनी गर्मी और ऊपर से बस भी नही चल रही है। ठीक है, जब तुम्हारी इच्छा हो तब ही चलना।

26. **संगत का असर**

मैं आज आपको अपने जीवन का एक किस्सा सुनाना चाहता हूँ, जिसने मेरी जिंदगी में बहुत सारे बदलाव किए। बचपन से ही मुझे मेरे माता-पिता ने अच्छे संस्कार दिए है और उनके दिए गए संस्कारों ने मुझे प्रभावित भी किया। लेकिन बाहर पढ़ने जाने के बाद मेरे जीवन में कुछ नए दोस्तों का आगमन हुआ। उनमें कुछ बुराइयाँ थीं, लेकिन मैंने सोचा कि इसका मुझपर कोई असर नहीं पड़ेगा। लेकिन साथ रहते-रहते धीरे-धीरे मुझपर भी उनका कुछ असर पड़ने लगा। मैं भी अपने सारे अच्छे संस्कारों को छोड़कर उनके बताए रास्तों पर चलने लगा और जल्द ही बुरे कामों का परिणाम भी मेरे सामने आ गया। मैं अपनी अगली परीक्षा में फेल हो गया और तब जाकर मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ कि मैं किस रास्ते पर चल पड़ा था। सच ही कहा गया है कि बुरी संगत का बुरा असर ही होता है।

OR

मैं तितली हूँ

मैं एक तितली हूँ। मैं एक छोटे-से अंडे से निकली। उसमें से लार्वा निकला और दो रंगीले, कोमल और चमकीले पंखों को अपने

शरीर पर लिए हुए मेरा जन्म हुआ। मुझे फूलों से विशेष लगाव है। रंग-बिरंगे फूलों पर बैठकर उनका रसपान करना मुझे बहुत पसंद है। जब मैं फूलों पर बैठती हूँ तो छोटे-छोटे बच्चे मुझे पकड़ने के लिए मेरे पीछे भागते हैं पर मैं उनसे बच निकलती हूँ। एक दिन एक शरारती बच्चा मुझे पकड़कर अपने घर ले गया। तब तो मैं घबरा गई थी। बच्चे की माँ ने समझाया कि वो मुझे खुले आसमान में उड़ने दे। जैसे ही उसने मुझे छोड़ा, मेरी जान में जान आई और मैं खुले आसमान में उड़ गई।